Review Of Research
Vol.2, Issue. 9, June. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.reviewofresearch.net

ORIGINAL ARTICLE

नई सदी की कहानियों में अभिव्यक्त बाल मनोविज्ञान

एल.पी.लमाणी

हिंदी विभाग,
कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड– कर्नाटक.

सारांशः

साहित्य समाज का दर्पण है, अतएवं मनुष्य के जीवन का चित्र उस साहित्य में प्रकट हुआ रहता है ।कहानी और उपन्यास के पात्रों ने मन की अवस्था को व्यक्त रहते हैं ।उस मन का अध्ययन ही मनोविज्ञान हैं ।उस विज्ञान शाखा बाल मनोविज्ञान की अभिव्यक्ति कहानियों में अध्ययन करने हेतु इस शोध कार्य किया गया है । वर्तमान समाज कि विसंगतियों को दृष्टि में रखकर बच्चों की कहानियों को लिखा गया हैं ।मॉ अपने बच्चों की मनस्थिति को अच्छी तरह से समझ सकती है । अतएवं महिला लेखिकाऍ बाल मनोविज्ञान को मध्यनजर रखकर कहानियों की रचना किया है । ऐसे कहानियों में अभिव्यक्त बाल मनोविज्ञान का अध्ययन इस शोध कार्य में किया गया है ।नई सदी की महिला कहानीकारों की कहानी में अभिव्यक्त बाल मनोविज्ञान को बालकों के चेष्टाओं के अनुसार दर्शाने का प्रयास किया गया है ।बच्चो में इर्शा, जगडालु, जिद्दी, खेलकूद, के प्रति आसक्ति, झूठ बोलना, बडों का अनुकर करना चोरी करना, आदि अनेक चेष्टाओं को बाल मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए शोध कार्य किया गया है ।

1.झूठ बोलने की चेष्टा :

बच्चों मे अक्स अपने मनोकाना के सिध्दि के लिए झूठ बोलते देख सकते है ।इस चेष्टा को ‘ सपना ‘ कहानी में पा सकते है ।कृष्णा कुमारी जी ने अनुभव के बाल चेश्टा को व्यक्त किया है ।अनुभव अपने दोस्त के घर खेलने जाने के लिए अपने मम्मी पापा से झूठ बोलता है कि ‘‘पापा–पापा आज मुझे विकास के घर जाना है , मै कल स्कूल नहीं गया था ना, इसलिए होमवर्क पूछना है ।प्लीज होमवर्क करके जल्दी लौट आउंगा ।आप जाते समय मुझे असके घर छोडकर जाइए और लौटते समय वापर ले आईयेगा ।वैसे घर में आप और मम्मी बाजर जायेंगे तो मै अकेला रहूॅगा ।प्लीज मुझे विकास के घर छोड दिजिए ना ।’’[1] झूठ बोलना पडता है और वह बच्चे भी जानते है, पर खेलने के लिए झूठ से ही काम चलाना पडता है ।मालती जोशी की ‘ रिश्वत ‘ एक प्यारी सी कहानी में रेणु नामक छोटी लडकी ने एक बार पेन में स्याही भरने के चक्कर में ढेर–की ढेर स्याही पापी की मेज पर गिर गई थी पापा घंटो चीखते रहे, पर डर के मारे नार्थ पर डाल दिया ।बेचार नाथु पर बेकार डॉट पडी ।[2] .

2.जिद्दी स्वभाव के बच्चे :

मालती जोशी की कहानी ‘ दादी की घडी ‘ दिपू आलाराम के लिए जिद करता है ।अपने दीदी या भैया के सिरहने रखा कर सोते और वे जल्दि उठ जाते । पर उसके भाग्य में तो सुबह आठ बजे पापा कि डॉट खाकर उठना पडता था । उसे ताज्जुब होता– इन लोगों की परिक्षाऍ क्या रोज चलती ही रहती है । जब देखो तभी चार बजे से उठकर पढने बैठ जाऍगे ।

एक दिन तो जिद पर अड गया ।उसके स्कूल में दूसरे दिन इंस्पेक्टर आनेवाले थे। उसने आते ही जोरदार शब्दों में एलान कर दिया– आज घडी मैं लेकर सोउंगा । क्या हमे पढाई नहीं करनी होती ? जब देखो तब इन्हीं कि शान चलती है । इस प्रकार के जिद को बच्चों में अकसर देखा करते हैं । जो छोटे–मोटे वस्तु के लिए या खेल–कूद के लिए या खाने–पीने के विशय में पाया जा सकता है ।उसे ही बाल मनोविज्ञान के स्वभाव कह सकते है। डॉ. सरला अग्रवाल जी कि ‘ प्रोमीज ताईजी ‘ नामक कहानी में विक्की भी टेपरिकार्डर के लिए जिद करता है ।‘‘ वह रो–रोकर कहता है, मम्मी आपने टेप देने का वादा किया था, मुझे टेप चाहिए, दे दोना प्ली ।’’[3] विक्की के हट या जिद्दीपन से बाल चेश्टा को पा सकते है। डॉ. सरला अग्रवाल जी ने मनोवैज्ञानिक ढंग से विकास ;विक्कीद्ध का चित्रण किया है ।प्रतिभा रॉय की अव्यक्त कहानी में घर में काम करनेवाला लडका कलुआ में भी यह जिदपन को देचाा जा सकता है ।गॉव जाते समय उसने अपनी मालकिन वसुधा को छः महिने के पुरी तनख्वाह मॉगता है ।अपने घर से स्थिति ठीक न होने का कारण दिया पर वसुधा नहीं मानी ।फिर भी कलुवा नहीं माना ‘‘ खबर आई है की घर कि हालत बहुत खराब है , आजकल चुल्हा तक नहीं जलता बल्कि तनख्वाह के अलावा कुछ रूपये और उधार दे देती तो अच्छा होता।’’[4] इस प्रकार कलुवा ने जिद करके पैसे ले लिया ।प्रतिभा जी की और एक कहानी ‘‘ ऑखे ‘‘ उसमें भी बालक का जिद्दीपन को देखा जा सकता है ।राजु नामक लडका अपनी मॉ को पागलखाने से लेज्जाने की जिद करके बैठा है ।वह वाचक के पूढने पर कहता है ‘‘ मैं अपनी मॉ को साथ लेक जाउंगा ।’’[5]

उस बालक के पिता नशेखोर, घुस्सेवाला, गैर जिम्मेदार था ।अपने नशे के मद में उसने अपनी पत्नी को पागलखाने में डाल दिया था ।और राजु अस्पताल के गेट सामने माने धरना करके बैठ गया । अंत में वहॉ अपने मॉ के साथ ही अस्पताल में रहता है ।पिता ने उसे भी

Title: *नई सदी की कहानियों में अभिव्यक्त बाल मनोविज्ञान*
Source:Review of Research [2249-894X] *एल.पी.लमाणी* **yr:2013 vol:2 iss:9**

क्रुरता से पागल करके डाल दिया ।राजु के जिद कारण पागल खाने में ही सही मॉ के साथ रहने लगा । रावण का तीर नामक कहानी में आभा गुप्ता जी ने 3 साल के बच्चे मे जिद्दीपन को दर्शा दिया है ।3 साल के बच्चे में रामायण सिरियल के पात्र राम, रावण के युध्द के प्रभाव पडता है और वह अपने खेल में वही खेलने लगता है ।राम–रावण का चित्र कार्टून बनाकर अपने बुआ को कहता है कि

'' अब रावण को मार दो ''
'' बेटे, ये तो कार्टून है ।इसमें तीर थेडी चलेगी ।''
'' नहीं बुआ, चल दे ।मार दे रावण को ।''[6] और वह उसे लकीर बनाकर रावण के पेत तक बनाकर मरने से खुश हो गया ।

डॉ. सरल अग्रवाल जी की कहानी ' मोरों का अपहरण ' में भी बच्चों के जिद्दीपन को देखा जा सकता है ।मोरों के समूह अपाने घर के नजदिक जंगल से आते देखकर बच्चे व्याकुल हाते है ।और उन मोरों को अपने घर में पालने के जिद से ज्वार के दानों को डाल–डालकर अपने घर के नजदिक लाते है ।मोर एक दोन दिन में ही नहीं आये मयुरी, नरेश, मुकेश, दिव्या, चारों भाई–बहनों नें मिलकर किद करके लगातार दाने डालते रहें ।उन लोगों को घरवाली और आस–पडोसवालों ने डॉटा पर बच्चों ने एक न माने ।आखिर एक दिन वे मोर और मोरनियॉ अपने बच्चों के साथ घर के नजदिक दाने चुगते नजर आये । बच्चों ने अपने लिद्द को न छोडे उन मोरों को अब अपने पर के ऑगन में देखकर वे बहुत खुश होंगे ।जीने पाने के लिए उनमें खाना–पिना, सोना–जागना, पढना–लिखने के होश नही ।एक ही जिद्द मोरों का अपहरण करना था ।

3.लालच स्वभाव :

बाल चेश्टाओं में 'लालच ' स्वभाव भी एक है ।जो हर बच्चे में सहज से पा सकते है।पर कुछ खास बच्चों में खास चिजों में लालच को देख सकते है ।बच्चे जो वस्तु देखते है उसे लेने कि लालच होते है।जो अभावग्रस्त बच्चों मे देख सकते है ।अक्सर, खाद्यवस्तु, खिलौने, आदि वस्तुओ पर बच्चों का ललचाई भाव देखा जा सकता है ।

शशी मंगल के कहानी संग्रह अहसास–दर–अहसास में संकलित ' कैचप ' कहानी में बालक का ललचाई भाव को देखा जा सकता है ।वह अपने घर किंचन में रचो कैचप देखकर उछल देता है ।बहुत दिनों बाद पापा ने कैचप लाये थे ।उसे जल्दी से जल्दी खाना चाहता था । पर मॉ ने कहा है कि आलु खत्मक हुए है पापा लायेगें तब ममी सेंडविच या सामोसे बनायेगी तब खाने को मिलता है ।पर वह अपने लालच को छोड नहीं पाया ।दीदी से बनाने लेने को मन किया पर दीदी पढ रही है ।उनके परिक्षाऍ नजदिक है वह डाटेगी कहकर सोचता है । अतः उसे एक विचार आता है – मम्मी पोचा धिने बाथरुम में गई है ।चलो कटोरी में कैचप रखते है जल्दी से ।देखा जाएगा जो होगा ''[7]

इस तरह के स्वभाव को बाल मनोविज्ञान अकेले बाल चेष्टा के रूप में कह सकते है ।पॉप्कोर्न नामक कहानी में भी ऐसी हि भाव को देख सकते है ।स्विटी और बंटी ने पॉपकॉर्न खाने कि लिए खाना बहुत तेज बनाया है कहकर खेलने जाते है और कुछ समय बाद बंटी आकर पॉपकोर्न का पेकेट लेने आया और अपने पेकेट के साथ दीदी को भी मैं ही दूंगा कहता है ।पर मम्मी को पता था किवह स्विटी को नहीं देगा दोनो वही खायेगा कहकर ।इसलिए वह बंटी को एक हि पॉपकोर्न का पॉकेट देती है ।

टिप कहानी में नीता सिंह जी ने एक दावे में काम करनेवाला छोटा बालक को टिप के रूप में एक रूपया मिलने पर वह भी ग्राहकों कि तरह चाय, और बिस्किट लेकर, चैर, टेबल रखकर पीते लगता है ।

प्रतिभा रॉय के अव्यक्त कहानी का कलुवा के स्वभाव भी ललचाई थी । यह लडका खाने का इतना लालची है कि भर पेट खाने बाद बर्तन मॉजते–मॉजते भी बच्चों की झूठी थालियों में बचे आलू के टुकडे, सब्जी मुठी भर भात इत्यादी, इकट्ठा करके खा लेता है ।[8]

प्रतिभा जी ने उसके ललचाईं भाव केवल खाने के प्रति हि नहीं दर्शा किया । अभावग्रस्त जीवन में भौतिक आवश्यकताऍ न मिलने के कारण बच्चों मे यह चेश्टा देखा जा सकता है ।कलुवा जब उसके गॉग कुछ दिनों कि छुट्टी लेकर गया रहता है ।

मालकिन वसुधा को अपना नया शॉल नहीं मिलता है तो उसे तर्क करती है ।कलुवा कि वे ललचाई ऑखे वसुधा को याद आ रही थी ।बापके लिए उसने अचानक चार क्यों मॉगी?जाते समय पूरी तनख्वाह क्यों ले गया ? उसने यह भी कहा था, चादर न भी हुई तो कोई बात नाहीं, जीने के लिए खाना तो चाहिए ही ।[9] वसुधा केवल यह समझ गई कलुवाने वह शॉल चुराकर अपने बाप को दिया होगा ।

खिलौनों के प्रति बच्चों का लालच को नीलम कुलश्रेष्ठ कि आरोपण कहानी में देख सकते है ।बोनी अपने दोस्त के रॉबॉट कार पर मोहित होता है ।अपने मॉ से कहता है '' मुझे भी दिला दो न ऐसा रॉबॉट ''[10] उसके चेहरे पर सारा लालच व आकर्षण रॉबॉट के लिए भर उठा । अकसर बच्चे अपने दोस्तों के खिलोंनो को पसंद करते है और उन्हें पाने के लिए ललचाते है ।

डॉ. सरला अग्रवाल के कहानियों में मन का लालच हर एक कहानी में देख सकते है ।जो किशोर मन की कहानियॉ में संकलित है । सत्यपथ में मनु और उनके दोस्त इतवार के दिन मैदान में घंटो खेलकर समय टेले पर समय ताजा रसीले चिक्कूओं को देखकर ललचाते है। ताजा, सुंदर, चिकने–चिकने चीकू देखकर उन सभी के मुॅह मे पानी भर आया ।सुधिर ने मनु को कहा –

'' मनु देख तो कितने बढिया, ताजा–ताजा चीक्कू चले आ रहें हैं ।लपक कर उठाले दो–चार, मेरे यार ! रास्ता बढिया कट जाएगा ''[11]

बच्चो के बाल चेष्टाओं पर लेखिका जी ने प्रकाश डाला है ।कभी खाना–पीने के वस्तु पर लालच दिखाया तो कही पनने–ओढने में दिखाया है ।मजबूरियॉ कहानी में रानु को नए कपडे पर लालच दिखाया है ।अब दिवाली भी तो पास में है , दीदी–जीजाजी उनके बच्चे सभी तो आयेंगे ।इस मौके पर क्यों न इस बहाने नया सलवार सूट बनवा लिया जाए. कब से उसने कोई नया कपडा तन पर नही डाला है ।'' घर में घुसते ही उसने बडी उमंग के साथ मम्मी से कहा, मम्मी, चलो आज सलवार सूट का कपडा खरीद लाते है ।[12]

मोरों के अपहरण में चार बच्चों को मोरों प्रति लालच को दर्शा दिया है ।मोरो को अपने घर के अंगन में लाने के लिए बहुत तदनों से ज्वार के दाने डालकर प्रयत्न किया । मोरों के अपहरण शब्द में हि लालच भाव देख सकते है ।जगल के सुंदर पक्षी को अपने घर के आने के विचार को लालच हि कह सकते है ।सुंदर पक्षी को अपहरन–आसान काम नहीं पर बच्चों को उसके लालच उसे आसान बना दिया। सत्य का मार्ग कहानी में जहीर नामक बालक को स्कूल में सब से ज्यादा नंबर लेने के लालच था ।इस लालच से हर एक कार्यक्रम में माईक के सहायता से हासिल करता था ।जहीर के पिता बिजली का काम करता था।स्कूल के कार्यक्रमों मे वहीं माईक, लाईत आदि संभालता था ।वह अपने बेटे जीतनपे के लालच से दुसरों के बच्चे भाषण करते या गाते समय खराब स्वर कर देता और अपना बेटा बोलते समय उच्च और स्पष्ट आवाज आने जैसे करता ।वहीं लालच जहीर में आ गई और वह इसी लालच से हर एक प्रतियोगीता माध्यम से दृष्ट अभ्यास के प्रति आकर्षण को लालच में सर्शा दिया है ।मन के लालच गलतियों को करने में मजबूर बन देता हैं ।

4.खेल को ज्यादा पसद करनेवाले बच्चें :

हर एक बच्चा खेलना पसंद करता है ।और उसका पढाई भी तो खेल के साथ हि शुरू होता है । नरसरी कक्षाओ में बच्चों को खेल के माध्यम में हि अक्षरों को सिखाने का नियम है ।अतएवं खेल हर एक बच्चे का हक भी तो है । पर जैसे वे बडे होते है वैसे पढाई के जिम्मेदारी भी तो बढते है ।इस विषय को न समझदारी भी तो बढते है ।इस विषय समझकर बच्चा खिन्न हो जाता है ।ऐसे स्थिति में खेलने के लिए तरसने डलते है ।इस बाल चेश्टा को मध्य नजर रखकर नई सदी के लेखिकाओं नें अपने कहानी में ऐसे बालकों का ख्रित्रण किया हैं । कृष्णकृमारी के सपना कहानी में भी अनुभव के स्वभाव में इस विषय को देख सकते है ।अनुभव विकास के घर पढाई के बहाना करके खेलने को हि जाता है ।

अनुभव और विकास के संवाद में खेल के प्रति इच्छा प्रकट होता है ।अनुभव ने बोला–मेरे पडोस के सारे बच्चे सडक पर, गलियों में पार्क में क्रिकेट, ऐस–पाइस, गुल्ली डंडा और भी बहुत से खेल खेलते है ।मेरा दिल करता है उनके साथ खेलूँ , लेकिन ममी कभी नहीं जाने देती ।[13] शशी मंगल जी के कैचप कहानी में भी खेल के प्रति रूचि रखने वाले बालक को देखा जा सकता है ।रोज स्कूल जाना, स्कूल से आकर होमवर्क करना और खाना खाके सोना, इतना हि बच्चों को मिल रहा है । उन्हें खेलने के लिए समय हि नहीं मिलता है। स्कूल में थोडा वे खेल सकते है पर वह भी कितना समय ? इस विचार को कहानी में बच्चे ने इस प्रकार व्यक्त किया है – खेल घंटी में मजा आता है, वह भी थोडा सा ।अपने आप हि थोडा सा मजा आएगा ।होती हि इतनी छोटी है ।प्लै ग्राउंड में जाने के जरा से देर बाद हि तो खत्म हो जाती है । फिर क्लास में जाकर पढो ।मन बिलकुल हि नहीं करता ।सारा दिल तो वहीं ग्राउंड में रह जाता है ।कई बार तो मेरा नंबर आने हि वाला होता है कि बैल बज जाती है ।ऐसा तो होना नहीं चाहिए ।[14]

कभी वह सोचता है कि स्कूल वाला पूरे दिन खिलाने हि रहे ऐसा होता तो कितना मजा आता ।वह यही भी सोचता है कि सर से हि बताकर थोडी देर खुद खेले '' सर में कल भी नहीं खेल पाया था, आज मुझे पहले चांस दे दिजिए प्लीज ।''[15] बच्चो में खेल के प्रति लगाव को हि बाल चेश्टा कह सकते है ।इसमें बाल मनोविज्ञान के तत्वों को देखा जा सकता है ।

शशी मंगल के पॉपकोर्न कहानी में भी बच्चों में खेल के प्रति आसक्ती देख सकती है ।खेलने अपने फ्रेड्स के घर जाने के लिए मम्मी के बताये काम मिनटों में करने लगते है । ''देखो तुम लोग नहाओगे, नहा धोकर पढोगे तभी तुम्हे तुम्हारे फ्रेंड्स जे जाने दूँगी नही तो नहीं।''[16]

बच्चों ने जल्दी जल्दी मम्मी के बतातें काम करके खना खा रहे थे ।तब उनके दोस्त हि घर आ गए तो बोलने लगे, ''मम्मी, पेट भर गया है''[17] दोनों हि बच्चे एक साथ बोले ।अब कहॉ उन्हें खाता रूचता है , खेलने जो जाना है ।दोनों कहा मिरची ज्यादा लगी है अब वे नहीं खा सकते ।बंटी ने मम्मी से कहा थोडी देर खेलने के बाद '' मम्मी हम सीमा के जा रहे हैं खेलने ''[18] बच्चे खेल में मदहोश हो जाते है उन्हें और कुछ नहीं पता ।दुनियादारी से परे, बेखबर बेहोश हो जाते है ।

5.धैर्य और साहस :

बच्चों में आर्थिक धैर्य और साहस भी होता है जो बडों में नही होता है ।बच्चे के मन शांत गंभीर होता है ।जब बडे भी न करनेवाले काम भी छोते करते है, तब उसे बाल चेष्टा कह सकते है ।' जाल ' कहानी के माध्यम से आभा गुप्ता जी ने धैर्य शाली बालक का चित्रण किया है । जो समुद्र के किनारे मछली पकडने लिए ' जाल ' बिछाऍ बैठा था ।उसमें एक समुद्री सॉप फंक दिया ।ऑप नाम से हि डरनेवाले बडों से भी अधिक धैर्यशाली बच्चें का चिर्तण आभा जी ने किया है ।

आभा जी के लढाई कहानी में भी बच्चों में धैर्य को पाया जा सकता है ।दो बच्चे भूखें से कंगाल है, पेत भरने के लिए कुछ चारा न पाकर एक स्वामी जी साहस पर प्रवचन को याद करके भूख से लडते है । स्वामी जी के प्रवचनवाले लडका दैत्य से परेशान होकर रोज रोज के तंग से मरना हि बेहतर मानता है और एक दिन दैत्य से पूछता है – '' तुम शक्तिशाली हो हर काम कर सकते हो ।यह बताओ, मेरी उम्र कितनी है ?''[19] दैत्य उस बालक को कहा कि तुम्हारी उम्र लम्बी है । लडका चलाकि से बात करता है मै जीना चाहता हूँ, मुझे मेरी उम्र घटवा दो । ब्रम्हा के लिखे हुए को कोई नही बदल सकता मैं भी नहीं कहकर दैत्य कहता है। तब लकडे ने जलती हुई लकडी उठाकर कहा '' तब तुम मुझे मारनेवाले कौन होते हो चले जाओ ।''[20] दैत्य को भगा देता है, वह फिर कभी नहीं लौटता है ।इस प्रकार के प्रवचन से प्रभावित होकर भूख नामक दैत्य को भगाने का प्रयास करते है ।

डॉ. सरल अग्रवाल जी कि 'निःशब्द' कहानी में एक छोटी बच्ची का धैर्य साहस दर्शा दिया है । दशहरा के उत्सव में रामलीला खेल के अभ्यास करते समय मुनिया ने अपने भाई प्रशांत को बाण से ऑखे फोड डाल दिया । मुनिया ने अपने धैर्य के कारण अपने भाई के ऑखो कि रोशनी हमेशा गॅवा डाला ।उसने प्रशांत को कहॉ कि, ' अरे तू धनुश्य को ठीक से तो पकड प्रशांत ।ला मुझे दे धनुश्य बाण, मैं चलाकर दिखाती हूँ तूझे ।'[21] ऐसे धैर्यशाली बच्चे जो बडे जो बडे भी न करनेवाले काम करके अपना साहस दिखाते है ।यह उनका बाल चेश्टा कह सकते है ।

डॉ. शकुंतला कालरा के ''काश ! ऐसा हो जाए '' नामक कहानी में ओपू का साहस धैर्य को देख सकते है । टीपू अपने गरीब मॉ को मददत करता रहता है ।सुब कुछ घर में जांडू, पौछा करके स्कूल जाता रहता है । गरीबी का सामना करना कम साहस का काम नही है । टीपू के पिता पियक्कड, गैरजिम्मेदार है ।मॉ अकेली काम करके बच्चों को पालती है ।टीपे अपने घर किस थिति से आहट था और धैर्य से जीवन का सामना कर रहा था।बचपन को खेल मजाक से गाजरनेवाले बच्चे अपने गरीब परिस्थिति को संभालना कम साहस का काम नहीं है ।

प्रतिभा रॉय के ऑखे कहानी में थे धैर्यशाली बच्चे का चित्रण पाया जा सकता है । अपनी मॉ को पागलखाने से लेने के लिए राजू अस्पताल के गेट के सामने बैठा है ।पिता के शोशण से मॉ को पागलखाने में भेज दिया है ।प्र राजू को पता है कि उसकि मॉ पागल नहीं है , वह उसे वापस ले ने गॉव से भागकर आया है ।और अजेमीन पर '' मेरी मॉ पागल नहीं है ''[22] कहकर लिखा है ।

सत्यपथ कहानी में लेखिका डॉ. सरला अग्रवाल जी ने मनु के धैर्य और साहस को दर्शा दिया है । मनू ने ठेलेवाले के ठेले से ताजा–रसीले चिकू उठाकर अपना धैर्य और साहस दिखा दिया है । मित्रों के संग खेलकर मैदान से वापस आते समय सामने चिकू के ठेले में से आठ–दस चिकुओं को पलक मारते हि सठाकर साहस का प्रदर्शन करना भी बाल चेष्टा है ।

6.' भय ' एक बाल चेष्टा :

भय बच्चों के मन के स्वाभाविक गुण है ।सामान्य रुप से देखा जाये तो मनुष्य जे गुणों में से 'भय' भी एक गुण है अबोध बालक के मन में भय छोटे–छोटे बातों में पाया जा सकता है । 'रिश्वत एक प्यारी सी' नामक कहानी मालती जोशी द्वारा रचीत बाल मनोवैज्ञानिक कहानी है ।रेणु के माता–पिता एक दुर्घटना में घायल हुए है ।घरवालों को परेशानी है कि वे जीवित है थी या नहीं ।पर रेणु को दादी के बातें आश्चर्य कर देते है ।सुबह शाम तुलसी पूजा करती है, भगवान का पूजा करती है ।और अब पापा–मम्मी के स्थिति के लिए अपनी कौन–सी पापों का फल भगवान ने उसे दिया इस बात को सुनकर उसे अपने गलतियों को याद करके डर रही है कि भगवान उसे सजा देगा कहकर मन–हि–मन

डरने लगती है । डरती है कि मेरे गलत कामों से गुस्सा होकर भगवान उनके पापा–मामी को संकेत में डाल दिया ।

मालती जी के 'दादी कि घडी' कहानी में दीपू को भय है कि पिकनिक जाने के लिए तैयारी रात को आलाराम रखने से प्रारंभ है । अकसर देखा करते है कि बच्चे अगर कहीं जा रहे है तो रात को सिते हि नहीं है, क्यों कि उनके मन में यह भय रहता है किवे अगर टीचर तो सात बजे स्कूल में रहने के लिए कहा है । इस डर से वह सुबह चार बजे हि दादी से भी पहले उठ गया ।

'देवता का लाल' जलज भादुडी जी का बाल मनोविज्ञान से सम्बन्धित कही है । इस कहानी में बालक मन भय से ग्रस्थ है । गॉव का पहलूँ नामक बालक को कुष्ठ रोग रहने से उनके मन भयभीत हो गया। जब ओहलूँ को अपने रोग के बारे में पता चला तो अपने मास्टरजी से पूछता है '' मास्टरजी, अब मुझे कहाँ चके जाना चाहिए ? मास्टरजी क्या में अब स्कूल नहीं जा सकता ?फिर, अब मैं कहाँ जाउँ ? मास्टरजी, क्यों मेरे लिए अब मर जाना हि एक मात्र रास्ता है ?'' [23]

डॉ. सरला अग्रवाल कि निःशब्द कहानी में भय को मुनिया के माध्यम से प्रकत किया है। लेखिका जी ने मुनिया के बाल चेष्टा को मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यक्त किया है । अपने सहज नटखटपन के स्वभाव के कारण मुनिया रामलीला खेल के अभ्यास करते समय प्रशांत को बाण चलाना सिखाते समय उसके ऑख में लग जाता है । अबोध बच्ची से गलती से भाई के ऑख कि रोशनी हमेशा के लिए चला गया । अपने इस अबोध कृत्य से बहुत भयभीत हो जाती है । उस दिन से वह मंद बन जाती है पढाई खेल कूद में होशियार बच्ची अपने अनजान गलती के कारण उसके मन से डर पैदा हो गया कि आगे उसके हाथ से कौनसी गलती हो जायेगी । बालकों के मन अतीव सुक्ष्म रहता है उस मन में भय घर करने से बुध्दि मंद पड जाता है ।

7.ईर्शा करना एक बाल चेष्टा है :

मन के नवरस में एक ईर्शा भी है अतएवं बच्चों के स्वभाव में यह गुण को भी पाया जाता सकता है । अपने भाई–बहन, सहपाठी से ईर्शा करते अकसर देखा गया है । कहानी कारों ने भी इस बाल चेष्टा कि अपनी कहानी कि माध्यम से दर्शा दिये है । मालती जोशी के रंग बदलते खरबूजे में अतुल और असमीम नामक दों बालकों में ईर्शा मनोभाव को दर्शा दिया है। दोनों रंगरुप से राम–लक्ष्मण कि जोडी है। पर घर में प्रवेश करते हि राम–रावण बन जाते।

माधुरी शास्त्री कि मन के तार कहानी में ईर्शा भाव देख सकते है । राधे एक गरीब निराश्रित है : अपने मॉ और बहन के साथ एक पेड के निचे रहा करता है । उस पेड के सामने हि एक भव्य घर है, जो गौमत का है । मॉ डॉक्टर है और पिता व्यापारी, पापा अकसर यात्रा पर हि रहा करते हुई । घर में नौकर–चाकर हैं, खेलने के लिए कुत्ता है । पर मम्मी– पापा का प्यार, ममता मात्र नही है । राधे के पास यह सब नहीं है पर मॉ का प्यार बहन कि स्नेह है। इसे देख गौतम को ईर्शा होता है । '' तुम मॉ बेटे एक साथ दिनभर रहते हो, एक दूसरे का सुख दुःख सुनते और बॉटते तो हो । रुखा सुखा हि सही, संग बैठकर खाना खाते तो है । जब इच्छा होती है तब तुम उसको छू तो सकते हो । रातों को उसके चिपक कर चैन से तो सो लेते हो ।'' [24] गौतम मॉ–बा पके प्यार को न पाकर राधे के सुख से ईर्शा व्यक्त करता है ।

8.बडों का अनुकरण :

मनुष्य को अनुकरण का गुण प्राकृतिक रुप से मिला है । वह हर एक काम अनुकरण से हि सिखता है । बच्चों का अनुकरन करके हुए आगे बढना है । घर में बडों का, स्कूल में टीचर का, पशु पक्षीयों का अनुकरण करते हैं ।

लक्ष्मी सहाय सिन्हा जी कि 'टीचर' कहानी में 'प्रज्ञा' को पॉच वर्ष में 16–17 वर्ष सवरूँ वर्ष का एक छात्र मिलता है । जो कहानी के वाचक के परिचित व्यक्ति का सम्बन्धी था । सावरूँ के पढना उन्हें दिक्कत हो रही थी । पडोस में रहने वाली प्रज्ञा अंकल के पास आकर बैठा करता थी । अंकल ने उसे सावरूँ को पड़हाने को कहा तो वह बडे हि उत्साह से पड़हाने लगी । वह सावरूँ को कहती है देखो सावरूँ, अब चार बज गए है अपनी पढाई शुरु करो । [25]

वह सावरूँ को डिक्टेशन भी देती है । वाक्य को देते समय टीचर के अी अनुकरण करती है । उसके गलती को बताती है, 'सावन' को तुमने सवन, आया में तुमने अ पर मात्रा नही लगाई है तुमने तो लिखा है– 'सवन आया' टीचर को ध्यान से सुननेवाले बच्चें को उनका व्यवहार का प्रभाव बच्चों के मन में पड जाता है । प्रज्ञा आने टीचर का हि नकल करती है । सावरूँ को डॉटना और अप्यार से समझनेवाले विषय को अनुकुल किया है ।

मालती जोशी कि दादी कि घडी नामक कहानी में टीपू भी अपने भाई बहन के तरह आलाराम रखना चाहता है । और एक दिन जिद्द करके अपने सिराहने आलाराम को रखकर सोता है । बडो के व्यवहार से प्रभावित होता है और उनके अनुकरण करने लगेंगे ।

कृष्ण कुमारी कि सपना कहानी में अनुभव अपने पापा को झूठ बोलते सूना था । और विकास के घर जाने के लिए अपने पापा को झूठ बोलकर खेलने जाता है । विकास के सामने अनुभव अपने मन कि व्यथा सुनाते समय कहता है– '' हमसे` कहते है झूठ मत बोलो और जब पापा के कोई मित्र आते हैं तो कहते है कि जाओ कह दो, पापा घर पर नहीं है ।'' [26]

बच्चा कहानी में मिरा चन्द्रा ने गर्व के व्यवहार को भी मॉ का अनुकरण करते दर्शा दिया है । शर्व मॉ के साथ गॉव गया, उसने देखा मॉ बडो के पैर छूकर आशिर्वाद ले रही है तो वह भी जमादार चाचा का पैर छूता है । अनुकरण करके हि बच्चों सब सिखते है चाहे वह अच्छे आदत हो या बुरे । बडों के पैर छूना अच्छे आदत हि है । पर गॉव में जातीयत होने के कारण जमादार को छूते तक नहीं पर गर्व से अनुकरण किया ।

अमानत कहानी में उर्मी कृष्णजी ने एक छोटी बच्ची को अनुकरण करते दिखा दिया है। नए घर जाने के लिए मम्मी घर के सभी वस्तुओं को बॉधकर लाद रही है । तो चार साल कि गुडिया अपने फ्राक में पत्थरों को लेकर आती है । बच्चों को अपनी वस्तुओ को भी मॉ की तरह लेकर नए घर में जाना है ।

9.जिज्ञासा प्रवृत्ति :

बच्चों के मन में नए विषय को जानने कि जिज्ञासा प्रवृत्ति होती है । अपने मन के अनुमान को स्पष्ट जाने बिना न छोडते । नाना प्रकार के प्रश्न करते है । जब उन्हें पूरा यकिन, तसल्ली होने पर हि शांत होते है । आभा गुप्ताजी कि रावण का तीर कहानी में 3 साल का बच्चा रामाण सिरियल देखकर प्रभावित होता है । राम रावण को मारता है, जो धनुष्य और बाण बच्चे के लिए नए वस्तु है । अपने खेल में राम–रावण का युध्द के रुप में खेलता । कुछ लकरो से बनी आकृति को राम रावण समझाकर अपनी बुआ से कहता है रावण को मारो, उन्होंने तीर को लंबा करके रावण के पेट तक बना दिया । फिर वह बोला ''हुआ अब रामचंद्रजी को मारो । अब रामचंद्रजी को कैसे मार सकते है ? उसे कैसे समझाये वह पूछता है, ''क्यों नही मारते ?'' मारते है '' [27] बच्चा जिद्द करता है?व्याकुल बच्चे कि उत्सुकता अब इस बात को जानने में है कि '' रामचंद्र जी को क्यों नही मारते ?'' इस बात को जाने बिना वह शांत नहीं हुआ । अंत बुआ ने उसे बताया कि ''राम भगवान है । बहुत अच्छे हैं ।

रावण गंदा हैं राक्षस है ।'' [28]

'मासुम' कहानी में माधुरी शास्त्री जी ने एक छोटे बच्चे मन कि जिज्ञासा को इस तरह प्रकट किया है । ;टांगेद्ध घोडे भागते समय उसके पैरों के टाप से आग निकल रही थी । वह विशय को जानने के लिए अपनी माँ से पूछा मम्मी घोडे के टाप से आग क्यों निकलती है ? पर उसकी मम्मी दूसरी औरतों से बाते करने में व्यस्त है । और वह बार–बार पूछने पर गुस्सा करती है कि अपने पापा को पूछने को कहती है । वह लडका पापा से नाराज था, वह बोलता है कि रहने दो मैं घोडे से हि पूछ लेता हूँ ।

काश! ऐसा हो जाए नामक कहानी में डॉ. शकुंतला कालरा जी ने जिज्ञासू बालक का चित्रण किया है । इतवार के दिन वाचक ;ध्यापिकाद्ध अपने कक्षाएँ लेने जा रही है । उसके माँ ने वाचक के ऑटो में हि उसे डी ब्लॉक तक छोडने के लिए विनंती किया । वह 8–9 वर्ष का बालक वाचक को बहुत प्रश्नप पूछता है । कहा जा रही है ?क्यों जा रही है ?वह और आगे पूछता जा रहा है– पर आज तो इतवार है ।[29] उसकी तेज बुध्दि ने झाअ सवाल किया हॉ बेटा यहॉ इतवार को बडी लडकियॉ पढने आती है ।

क्यों ऑटी बाकी दिन क्यों नही उससे उत्सुक नजरों से मेरी और देखा बेटा ये वे लडकिया है जो नौकरी करती हैं या कोई दूसरा कोर्स कर रही है । बाकी दिन ये वही जाती है । इस प्रकार बच्चों में जिज्ञासा देखा जा सकता है । वे पूरी तरह जानने के बाद हि चूप रहेंगे, वरना बिलकुल नहीं मानेंगे । 'मन के तार' में माधुरी ने गौतम नामक बालक कि जिज्ञासा दर्शाया है । गौतम अमीर मॉ–बाप के एकलौता बेटा है । घर के पास एक बालक अपनी मॉ और बहन के साथ पेड के नीचे निवास करता रहता है । उसके बारे में जानने कि जिज्ञासा गौतम के है वह राधे से कहता है– ''राधे यह तो मैं जान चुका हूँ कि तुम लोग भिखारी नहीं हो, पर तुम लोग कोई काम क्यों नही कर लेते । और उसे मरे कितने दिन हो गए ?'' [30]

गौतम के इन प्रश्नों से पता चलता है कि राधे के प्रति उसे जिज्ञासा है । वह राधे के बारे में सब कुछ जानना चाहता है । कुछ विषय उन्हे देख–देख कर जान लेता है ।

प्रतिभा रॉय कि 'नाथ' कहानी में अनाथ बालक को जिज्ञासा बहुत है । अनाथ बालक भीख नहीं मॉगना चाहता है, काम करना चाहता था । पर उसे कोई काम नहीं देते है । उसी के बच्चें वहॉ स्कूल को जाते देखा तो उसे भी स्कूल जाने का मन होता है । वहॉ पिता का नाम नही अपना नाम भी नही है तो कैसे प्रवेश पाता । तब दुनिया में बहुत पुरूष है कोई अपना बात बन सकता है । पर उसे भगवान तो नहीं मिले । अंत में अपने जैसे अनाथ लोगों के साथ रहने लगा । इस कहानी में प्रतिभा जी ने अनाथ का जिज्ञासा को प्रारंभ से अंत तक दर्शाया है । बालक अपने जिज्ञासा के कारण ही स्कूल में पढने के लिए, काम करने के लिए पिता को ढुँढने के लिए अंत में भगवान के खोज के लिए जाने से हि उस जिज्ञासा प्रकट होता है ।

'मालती जोशी' के कहानियॉ में भी जिज्ञासू बालकों को देखा जा सकता है । 'दादी की घडी ' में टीपू नामक बालक को दादी की घडी 'तकीया' (सिरहाने–चपससवू) को जानने की जिज्ञासा है । दादी कहती है कि मै तो आलाराम नहीं रखती रोज चार बजे उठ जाती हूँ। मेरा तो तकिया हि आलाराम है । सोते समय उसे बताती हूँ कि मुझे इस समय जगा दो तो वह मुझे जगा देता है । दीपू भी जिज्ञासा से दादी की तरह करने लगता है ।

'रिश्वत ' एक प्यारी सह कहानी में रेणु नामक लडकी में जिज्ञासा पाया जा सकता है । उसकी दादी को सुबह प्रार्थना करते सुना, '' तुलसी महारानी ! बुढापे में किस अपराध कि सजा मुझे दे रही है, भैया !'' [31] रेणु सोचने लगी कि बेचारी सुबह सवेरे उठकर नाहती है, दो–दो घंटे पूजा करती है । रोज पॉच देवताओं के दर्शन करती है, शाम को तुलसी पर दिया जलाती है, भला वह कोई अपराध कैसे कर सकती है । फिर भगवान उन्हें ऐसी सजा क्यों दे रहे है ?[32]

10.जगडने कि प्रवृत्ति :

दो भाई–बहन, हम उम्र के बीच किसी न किसी मतभेद आकर जगडना बच्चों का स्वाभाविक गुण समय, टी.वी. देखते समय, कपडे लत्ते पहनते समय देखा जा सकता है । यह बच्चों का बाल चेष्टा हि कह सकते है । पेन या पिन जैसे वस्तुओं को भी जगडेवालों बच्चों को आधुनिक काल में देखा जा सकता है । ऐसे बच्चों के चित्रण महिला कहानिकारों देख सकते है।

मालती जोशी ने 'रंग बदलते खरबूजे' कहानी में दो भाईयों के जगडालु स्वभाव का चित्रण किया है । अतुल और असीम दोनों का रंग–रुप मिलना–जुलना था विध्या–बुध्दि में भी कोई अंतर नही था । दोनों कि जोडी बिलकुल राम–लक्ष्मण कि तरह हि था । पर वह राम–लक्ष्मण घर में प्रवेश करते हि राम –रावण बन जाते । कब किस बात को लेकर न झगड पडेंगे, इसका कुछ ठीक न था । बचपन में जब ये लोग लडते थे, तो मम्मी कभी पुचकारकर, कभी डॉक्टर और कभी कभी एकात चपत लगाकर इनको समझा लिया करती थी । तब यह आशा बनी रहती थी कि अभी बच्चे है, थोडे दिन बाद अपने–आप समझ आ जायेगी । पर बच्चे थे कि बडे होने पर हि नहीं आते थे । अब मम्मी के बीच बचाव करने को भी होसला नहीं रहा था । जब इन लोगों में जंग छीड जाती, तो वह चुपचाप एक कौनें में बैठकर, कानों पर हथ रथे बस सुनती रहती । अतुल और असीम के झगडने के कारण बिलकुल कुछ न रहता था । सुबह उठते हि जगडा शुरु करते–

''बाथरुम मे पहले में जाउुंगा''
''तूने मेरे तौलिये से हाथ क्यों पौछे ?''
''यह तेल कि शीशी तुमने खुली छोडी है''
''मेरा ब्रश तुमने जान–बुझकर नीचे गिराया है''
''मेरी मेज पर तुम्हारी कॉपि क्यों आयी है''
''तुमने मेरी कविता कि कॉपि क्यों खाली ?'' [23]

आभा गुप्ता के समता–असमता कहानी में भी बच्चों का जगडालु स्वभाव अभिव्यक्त हुआ है । तो भाई बहनों में कार के रंग को लेकर जगडा शुरु हुई बडी लडकी को सफेद रंग चाहिए, छोटी को ग्रे और अनंत 9 भाई.ब्राउन कलर चाहता था । बडी लडकी ''प्रकृति अपना कमरा बंद करके बैठ गई, पर अनंत और ललिता थे न्यूटोन बम कि नकल । अनंत ने ललिता के सैट किए हुए बाल पकडकर खींचें । ललिता ने पेंसिल हिक कि सैंडल निकाल ली । कमरा युध्दस्थल बन गया ।''[34]

इस बच्चों के घर में काम करने वाली रामरति के बच्चो में भी जगडा होता रहता है पर जगडने वाले वस्तु अलग । ''बडी लडकी तो एक तरफ खडी थी, पर राजु और छोटी नीनु एक –दुसरे के बाल खींच रहे थे । मॉ ने आकर अलग किया । नीनु ने बताया– ''राजू ने मेरी रोटी ले ली ''[35]

एक परिवार में कार के रंग के लिए जगडा तो कामवाली भाई के घर में रोटी के लिए सगे भाई बहन जगडे से लेखिका ने बाल चेष्टा को दर्शा दिया है ।

मलती जी कि और एक कहानी एक कर्ज एक अदायगी नामक कहानी में भी इस बाल चेष्टा को देखा जा सकता है । छत्रवाल में रहने वाले लडकियों ने अपने सह छात्रा ' रामकुंवर ' किकसी ने निकाल लिये थे । जो परिक्षा के फिस भरने के लिए अपने भाई से मंगाई थी । सुबह मनीओर्डर लेकर उसने जल्दी में डेस्क हि में रख दिया था । उन पॅखों को किसी लडकि ने चूरा लिया था । चित्राा मुद्‌गल जी जे नसीयत कहानी में भी इस चेष्टा को पाया जा सकता है । बालवाचक ने बेकरी से बन चुराता था । सौतेली मॉ उसे घर से निकाल दिया था। अपने पेत कि भूख को मिटाने के लिए उसने चोरी किया था ।

11.चोरी करने कि चेष्टा :

अबोध बच्चों के चेष्टाओं में से एक चोरी करना है । बच्चों को जो वस्तु भाता है, तो उसे अपना समझ बैठते है । उसे लेने के लिए समझकर या नासमझकर भी चोरी करते है । उन मासुमों को चूराना अपराध कहकर भी पता नहीं होता । तब बडों को हि समझना पडता है। इस बाल चेष्टा को नई सदी के महिला कहानीकारो में देखा जा सकता है ।

डॉ. सरला अग्रवाल के 'सत्यपथ' कहानी के 'मनुराम 'बचपन में चिकूओ को चुराया था। जब वह सात–आठ वर्ष का हि था, तब छुट्‌टी का दिन सुबह हि पॉच लडके मिलकर घर के सामने बने पार्क में खेलते जाते है । दोपहर तक वही खेलकर घर वापर आ रहे थे । उसी समय उन्होंने एक गोल–मटोल चीकूओ का देर ठेले पर लगाकर आता हुआ एक व्यक्ति को देखते है । उन सभी को खेल के बाद भूख लग गई थी । ताजा, सुंदर, चिकने–किचने चीकू देखकर उन सभी के मॅूह में पानी भर आया ।

दोस्तों ने मिलकर मनु को उकसाया और मनु हिरो के तरह पॉच–सात चीकू ठेले से उठाकर अपने निकट कि जेब में तथा दो–चार हाथों में भरकर पलटकर दौड चला । उस समय बच्चों के चोरी करना अपराध नहीं लगा । वह केवल उनका बाल चेष्टा थी । ऑखे कहानी में प्रतिभा रॉय जी ने राजु नामक बालक को भी इस प्रवृत्ति में दर्शाया है । अस्पताल में पागल बनाके रखे अपने मॉ को वापर लाने के लिए राजुने अपने पिता के जेब से 10 रूपया चुराया था । मालती जोशी जी कि रिश्वत एक प्यारी से नामक कहानी में रेणु ने भी अपने स्कूल में बेंच पर रखे इगली को चूराया था । और एक सहेली कि कॉपि से गणित के सवाल टिप चुराया था ।

माधुरी शास्त्री जी कि कहानी ' मन के तार' में भी बच्चों में एकांकिपन का भाव व्यक्त हुआ है । गौतम मम्मी डॉक्टर है पापा इंजीनियर है । पापा का अक्सर टुर में रहना पडता है और मम्मी को काम का समय हि नहीं रहता । अकसर गौतम को घर में अकेला रहना पडता था । वह अकेलेपन में इस तरह सोचता है ' मेरे सभी दोस्तों के परिवाल वाले तो घर पर हि रहते है ।' फिर मेरे साथ हि ऐसा कयों होता है ? दिन भर घर थां–गांय–सा करता है, चारों और सन्नाटा हि सन्नाटा छाया रहता है ।[35] गली में राधे को अपनी मॉ के सीने से चिपकके सोचा देखकर अपने आप बोलता ' मेरे दोस्त, मै तुम्हे कैसे बताउुं अकेले कमरे में अकेले पलंग पर डर डरकर मैने कितनी रातें गुजारी है । मेरी मॉ ने कभी सोचा तक नहीं, कि उसका बेटा कितना अकेला हैं, कितनी स्केली है उसकि छटपटाती हुई भावनाऍ । न मईम किसी से रुठ सकता हूॅ । न किसी के साथ खेल–कूदती । मम्मी कहती है हमारा स्टेटस उुंचा है ।.... स्टेटस उुंचा होने से बचपन कि नादान भावनाऍ म्मारतो नहीं दी जा सकती । मैं बहुत अकेला है, तन से भी और अ मन से भी । ''[35] बच्चों मे अकेलेपन कितना दर्दभरा होता है । बचपन में हि मॉ–बाप के जरुरत होती है । अपने मन के हर एक भावना को व्यस्त न करके घुटन होती है । बडों ने बच्चों का बचपन को छीन लिया है । वही बच्चे बडे होने के बाद विदेश में बस जाते है, तब माता–पिता को अकेलापन क्या है कहकर मालूम होता है ।

12.एकांकिपन :

मानव संग जीवी है, अतएवं वह कभी अकेला नहीं रह सकता । हम घर परिवार समाज संघ संस्था को निर्माण तो इस वजह से हि बनाया है । मगर आधुनिक जीवन में, वह भी कासकर शहरों में, मॉ–बाप दोनां नौकरी के लिए जाते है । बच्चे भी अपने संतान को नौकरों के साथ छोडना पडता है । पर वे बच्चे माता–पिता के प्यार के लिए तरसते रहते है । अकेलेपन उन्हों सताते है ।

कृष्ण कुमारी कि सपना कहानी में बच्चे एंकाकिपन का महसूस व्यक्त किया है । अनुभव के मम्मी को किटि पार्टी में जाना है, पापा को अपने बचपन के दोस्त को मिलने घर में अनुभव के अकेला रहना पड रहा था तो उसने विकास के घर होमवर्क करने के बहाने जाते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1.स्वप्निल कहानियॅा कृष्ण कुमारी – पृ. सं.–75
2.रिश्वत एक प्यारी सी, मालती जोशी–पृ.सं.–07
3.दादी कि घडी, मालती जोशी प्र.सं.–05
4.;जगमग दिप ज्योतियॅाद्ध प्रेमीज ताईजी डॉ. सरला अग्रवाल
5.अव्यक्त– प्रतिभा रॉय पृ.सं.–65
6.ऑखे – प्रतिभा रॉय पृ.सं.–45
7.रावण का तीर – आभा गुप्ता, पृ.सं.–50
8.अहसास–दर–अहसास–शशी मंगल–कैचप–पृ. सं.–136
9.अव्यक्त – प्रतिभा रॉय पृ.सं.–66
10.अव्यक्त – प्रतिभा रॉय पृ. सं.–67
11.आरोपण–नीलम कुलश्रेष्ठ पृ.सं.–127
12.सत्यपथ – डॉ. सरला अग्रवाल पृ.सं.–46
13.मजबूरियॉ – डॉ. सरला अग्रवाल पृ.सं.–58
14.सपना कृष्ण कुमारी –पृ.सं.–77
15.कैचप – शशी मंगल – पृ. सं.–133
16.कैचप – शशी मंगल – पृ.सं. –133
17.पॉपकोर्न –शशी मंगल त्पृ.सं.–122
18.पॉपकॉर्न शशी मंगल–पृ.सं.–123
19.पॉपकॉर्न शशी मंगल–पृ.सं.–123
20.जाल आभा गुप्ता पृ.सं.– 62
21.जाल आभा गुप्ता पृ.सं.– 62

22.निःशब्द–डॉ. सरला अग्रवाल पृ.सं.–02
23.ऑखे– प्रतिभा रॉय पृ.सं. –145
24.देवता का लाल जलज भादुडी पृ.सं.–43
25.मन का तार – माधुरी शास्त्री – पृ.सं.–63
26.टीचर लक्ष्मी सहाय सिन्हा – पृ.सं.– 27
27.टीचर लक्ष्मी सहाय सिन्हा – पृ.सं.– 27
28.स्पना कृष्ण क1मारी 7 पृ.सं.–77
29.श्रावण का तीर आभा गुप्ता – पृ.सं.–50
30.श्रावण का तीर आभा गुप्ता – पृ.सं.–51
31.काश ऐसा हो जाए – माधुरी शास्त्री –पृ.सं.–01
32.काश ऐसा हो जाए – माधुरी शास्त्री –पृ.सं.–01
33.मन के तार –माधुरी शास्त्री – पृ. सं. – 08
34.रिश्वत एक प्यारी सी– मालती जोशी पृ.सं.–07
35.रिश्वत एक प्यारी सी– मालती जोशी पृ.सं.–07
36.रंग बदलते खरबूजे – मालती जोशी–पृ.सं.–15
37.समता–असमता–आभा गुप्ता – पृ.सं.–39
38.समता–असमता–आभा गुप्ता – पृ.सं.–39
39.मन के तार– माधुरी शास्त्री – पृ.सं.–08
40.मन के तार– माधुरी शास्त्री – पृ.सं.–08